अध्याय – 10

# वित्त बाज़ार

**परिचयः–**

वित्तीय बाजार वित्तीय सम्पतित्तयों जैसे अंश, बाण्ड आदि के सृजन एवं विनिमय करने वाला बाजार होता हैं। यह बचतों को गतिशील बनाता है तथा उन्हें सर्वाधिक उत्पादक उपयोगों की ओर ले जाता है। यह बचतकर्ताओं तथा उधार प्राप्तकर्ताओं के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करता है तथा उनके बीच कोषों को गतिशील बनाता है। वह व्यक्ति/संस्था जिसके माध्यम से कोषों का (अलाट) आबंटन किया जाता है उसे वित्तीय मध्यस्थ कहते है। वित्तीय बाजार दो ऐसे समूहों के बीच एक मध्यस्थ की भूमिका निभाते है जो निवेश तथा बचत का कार्य करते हैं। वित्तीय बाजार सर्वाधिक उपयुक्त निवेश हेतु उपलब्ध कोषों का आबंटन करते हैं।

घरेलू बचतकर्त्ता → बैंक एवं वित्तीय संस्थाएँ → व्यवसायिक फर्मे (निवेशक)

**वित्तीय बाज़ार के कार्यः–**

1. **बचतों को गतिशील बनाना तथा उन्हें उत्पादक उपयोग में सरणित करनाः–** वित्तीय बाजार बचतों को बचतकर्ता से निवेशकों तक अंतरित करने को सुविधापूर्ण बनाता है। अतः यह अधिशेष निधियों को सर्वाधिक उत्पादक उपयोग में सरणित करने में मदद करते हैं।

2. **कीमत निर्धारण में सहायकः–** वित्तीय बाजार बचतकर्ता तथा निवेशकों को मिलता है। बचतकर्ता कोषों की पूर्ति करते हैं जबकि निवेशक कोषों की मांग करते है जिसके आधार पर वित्तीय सम्पत्तियों की कीमत का निर्धारण होता है।

3. **वित्तीय सम्पत्तियों को तरलता प्रदान करनाः–** वित्तीय बाजार द्वारा वित्तीय सम्पत्तियों के क्रय-विक्रय को सरल बनाया जाता है। इसके माध्यम से वित्तीय सम्पत्तियों को कभी भी खरीद या बेचा जा सकता है।

4. **लेन-देन की लागत को घटानाः–** वित्तीय बाजार, प्रतिभूतियों के विषय में महत्वपूर्ण

सूचनाएं उपलब्ध कराते हैं जिससे समय, प्रयासों एवं धन की बचत होती है। परिणामस्वरूप लेन-देन की लागत घट जाता है।

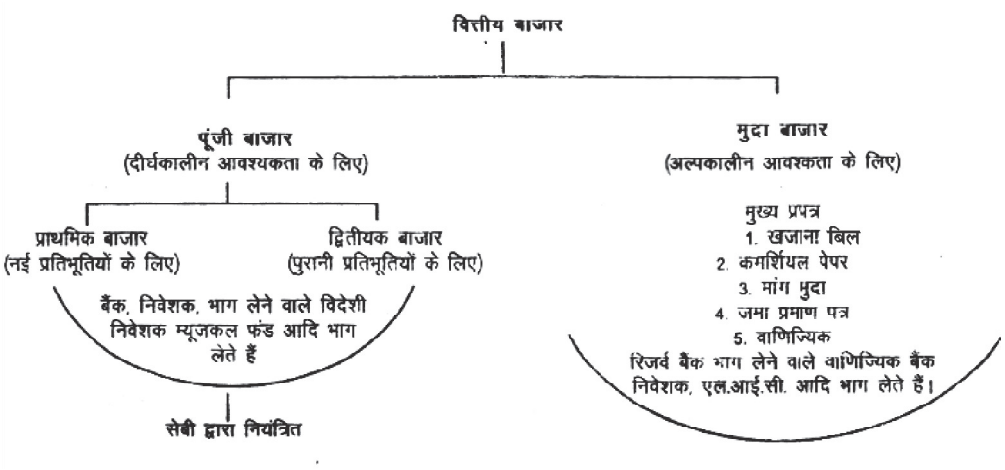


## मुद्रा बाज़ारः-

यह छोटी अवधि की निधियों का बाजार है जिसकी परिपक्वता अवधि एक वर्ष तक की होती है। इस बाजार के प्रमुख प्रतिभागी भारतीय रिजर्व बैंक, व्यापारिक बैंक, गैर बैंकिग वित्तकम्पनियाँ, राज्य सरकारें, म्युचुअल फंड आदि है। मुद्रा बाजार के महत्वपूर्ण प्रलेख निम्नलिखित हैंः-

1. **राजकोष / कोषागार प्रपत्र (ट्रेजरी बिल)ः-** इन्हें केन्द्रीय सरकार की तरफ से भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी किया जाता है जिनकी परिपक्व अवधि एक वर्ष से कम होती है। इन्हें अंकित मूल्य से कम पर जारी किया जाता है परन्तु भुगतान के समय अंकित मूल्य दिया जाता है। राजकोष बिल 25000 रू के न्यूनतम मूल्य और इसके बार बहुगुणन में प्राप्त होते हैं। यह एक विनिमय साध्य प्रलेख होते हैं जिनका स्वतन्त्रतापूर्ण हस्तान्तरण किया जा सकता है। इन्हें सुरक्षित निवेश समझा जाता है, इन पर कोई ब्याज नहीं दिया जाता बल्कि कटौती पर जारी किये जाते हैं।

2. **वाणिज्यिक (तिजारती) पत्रः-** यह एक अल्पकालिक आरक्षित वचन पत्र होता है जिन्हें विशाल एवं उधार पात्रता कम्पनियों द्वारा अल्पकालिक आरक्षित बाजार दर से कम दर पर नकधि उगाहने के लिए जारी किया जाता है। इनकी परिपक्वता अवधि प्राय 15 दिन से लेकर एक वर्ष तक होती है तथा ये विनिमय साध्य एवं हस्तान्तरणीय होते हैं। इनक प्रयोग कार्यशील पूंजी की आवश्यकता, मौसमी आवश्यकताओं तथा ब्रिज फाइनेंनसिंग के लिए करा जाता है।

3. **शीघ्रवधि द्रव्य (मांग मुद्रा)**:- यह एक लघुकालिक मांग पर पुर्नभुगतान वित्त है जिसकी परिपक्वता अवधि एक दिन से 15 दिन तक की होती है तथा अंतर बैंक अंतरण के लिए उपयोग किया जाता है जिससे भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार रिजर्व अनुपात बनाया जा सके। शीघ्रवधि द्रव्य ऋण पर जो ब्याज दिया जाता है उसे शीघ्रावधि दर कहा जाता है।

4. **बचत / जमा प्रमाण पत्र**:- यह एक धारक प्रमाणपत्र होता है जो बेचनीय होता है तथा जिसे वाणिज्यिक बैंकों एव विकास वित्त संस्थानों द्वारा जारी किया जाता है। इनके द्वारा अल्पवधि के लिए बड़ी राशि प्राप्त की जा सकती है। इनकी समता अवधि 91 दिन से एक वर्ष होती है।

5. **वाणिज्यिक बिल**:- यह एक विनिमय प्रपत्र होता है जो व्यावसायिक फर्मो की कार्य पूंजी की आवश्यकता के लिए वित्तीयन में प्रयुक्त होता है। इनका प्रयोग उधार क्रय विक्रय की दशा में किया जाता है। इसे विक्रेता द्वारा क्रेता पर लिखा जाता है तथा इसे व्यापारिक / वाणिज्यिक विपत्र कहते है इसे देय तिथि से पहले बट्टे पर बैंक से भुनाया जा सकता है।

**प्र०1. मुद्रा बाजार के किन्हीं दो प्रतिभागियों के नाम बताइये।**
(**संकेत**:- बैंक, एल. आई. सी)

**प्र०2. राजकोष प्रपत्र का न्यूनतम मूल्य क्या है ?**
(**संकेत**:- 25,000 रु.)

**प्र०3. मांग मुद्रा के प्रयोगकर्ता कौन हैं ?**
(**संकेत**:- बैंक)

**प्र०4. अल्पकाल हेतु कम्पनियों व संस्थाओं द्वारा रखी गई जमाओं के सापेक्ष बैंक द्वारा जारी वाहक दस्तावेज कौन सा है ?**
(**संकेत**:- जमा प्रमाण प्रपत्र)

**प्र०5. जीरो कूपन बाण्ड का दूसरा नाम लिखिए।**
(**संकेत**:- कोषागार, ऋणपत्र)

**प्र०6. नजदीकी मुद्रा किसे कहते हैं ?**
(**संकेत**:- सभी अल्प-'कालीन प्रतिभूतियाँ)

## पूंजी बाज़ारः-

यह दीर्घकालिक निधियों जैसे ऋणपत्रों तथा अंशपत्रों का बाजार है जो एक लम्बे समय के लिए जारी की जाती हैं इसके अंतर्गत विकास बैंक, वाणिज्यिक बैंक तथा स्टॉक एक्सचेंज समाहित होते हैं पूंजी बाजार को दो भागों में बांटा जा सकता है। (1) प्राथमिक बाजार (2) द्वितीयक बाजार।

## प्राथमिक बाज़ारः-

इसे नए निगर्मन बाजार के रूप में भी जाना जाता है। यहाँ केवल नई प्रतिभुतियों को निर्गमित किया जाता है जिन्हें पहली बार जारी किया जाता है। इस बाजार में निवेश करने वालों में बैंक, वित्तीय संस्थाएँ, बीमा कम्पनियाँ, म्युचुअल फण्ड एवं व्यक्ति होते है। इस बाजार का कोई निर्धारित भौगोलिक स्थान नहीं होता है।

## प्राथमिक बाज़ार में प्रतिभूतियों को निर्गमित करने की विधियाँः-

1. **(प्रॉसपैक्टस) विवरण पत्रिका के माध्यम से प्रस्तावः-** इसके अंतर्गत विवरण पत्रिका जारी करके जनता से अंशदान आमंत्रित किया जाता है। एक विवरण पत्रिका पूँजी उगाहने के लिए निवेशकों से प्रत्यक्ष अपील करती है जिसके लिए अखबारों एवं पत्रिकाओं के माध्यम से विज्ञापन जारी किए जाते हैं।

2. **विक्रय के लिए प्रस्तावः-** इस विधि के अन्तर्गत निर्गमन गृहों या ब्रोकर्स जैसे माध्यकों के द्वारा प्रतिभूतियों की बिक्री के लिए प्रस्तावित किया जाता है। कम्पनी द्वारा ब्रोकर्स को सहमति मूल्य पर प्रतिभूतियों को बेचा जाता है जिन्हें वे निवेशक जनता को अधिक मूल्य पर पुनः विक्रय करते है।

3. **निजी नियोजनः-** एक कम्पनी द्वारा संस्थागत निवेशकों तथा कुछ चयनित वैयक्तिक निवेशकों को प्रतिभूतियों का आबंटन करने की प्रक्रिया को निजी नियोजन कहा जाता है।

4. **अधिकार निर्गमनः-** यह एक विशेषाधिकार है जो विद्यमान शेयर धारकों को पहले से क्रय किए हुए शेयर्स के अनुपात में नए शेयरों को खरीदने का अधिकार देता है।

5. **ई-आरंभिक सार्वजनिक निर्गमनः-** यह स्टॉक एक्सचेन्ज की ऑन-लाइन प्रणाली के माध्यम से प्रतिभूतियाँ जारी करने की विधि है। स्टॉक एक्सचंज की ऑन-लाइन प्रणाली

के माध्यम से जनता को पूंजी को प्रस्तावित करने वाली कम्पनी को स्टॉक एक्सचेन्ज से एक ठहराव करना होता है जिसे ई-आरंभिक सार्वजनिक प्रस्ताव कहते है। इसके लिए सेबी के साथ पंजीयत दलालों को आवेदन स्वीकार करने हेतु नियुक्त किया जाता है।

**प्र० बाज़ार में नए निर्गमन के प्रर्वतन की निम्नलिखित विधियों को पहचानिएः-**

**(क) नए निर्गमन को किसी इंशोरेन्स कम्पनी को प्रस्तावित करना**

**(ख) प्रविवरण जारी करके जनता को आमन्त्रित करना।**

**(ग) शेयर बाज़ार की ऑन-लाइन पद्धति द्वारा जनता को पूंजी निर्गमित करना।**

**(घ) आम जनता को आमन्त्रण से पहले वर्तमान अंशधारों को नए अंश प्रस्तावित करना।**

**(संकेतः-** (क) निजी नियोजन (ख) आई.पी.ओ. (ग) ई-आई.पी.ओ (घ) अधिकार निर्गमन)

**प्र० प्रविवरण क्या होता है ?**

**(संकेतः-** एक प्रपत्र जिसके द्वारा जनता को पूंजी आफर करने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

**प्र० प्राणजल के पास L & T 1000 अंश है। L&T नए निर्गमन करना चाहती है। और प्राणजल के पास कम्पनी की तरफ से प्रस्ताव आया कि वह अपने वर्तमान अंशों के आधार पर हर 5 अंश पर 1 अंश नए निर्गमन में से ले सकती है। इस में नए निर्गमन की कौन सी विधि को दर्शाया गया है ?**

**(संकेतः-** अधिकार निर्गमन)

## द्वितीयक बाज़ारः-

इसे स्टॉक एक्सचेंज या स्टॉक बाजार के नाम से भी जाना जाता है। जहाँ विद्यमान प्रतिभूतियों का क्रय एवं विक्रय किया जाता है। यह बाजार निर्धारित स्थान पर स्थित होता है तथा यहाँ प्रतिभूतियों का क्रय एवं विक्रय किया जाता है। यहाँ प्रतिभूतियों की कीमत को उनकी मांग एवं पूर्ति के द्वारा तय किया जाता है।

**प्राथमिक बाज़ार तथा द्वितीयक बाज़ार में अन्तरः–**

| क्र. सं | आधार | प्राथमिक बाज़ार | द्वितीयक बाज़ार |
|---|---|---|---|
| 1 | प्रतिभूतियां | केवल नई प्रतिभूतियों को निर्गमित किया जाता है। | विद्वमान प्रतिभूतियों को निर्गमित किया जाता है। |
| 2 | प्रतिभूतियों की कीमत | कम्पनी के प्रबन्ध के द्वारा प्रतिभूतियों की कीमत निर्धारित की जाती है। | प्रतिभूतियों की कीमत उनकी मांग तथा पूर्ति के द्वारा निर्धारित की जाती है। |
| 3 | क्रय व विक्रय | यहाँ केवल प्रतिभूतियों को क्रय किया जाता है। | यहाँ प्रतिभूतियों का क्रय एवं विक्रय दोनों होते हैं। |
| 4 | माध्यम | यहाँ कम्पनी द्वारा सीधे या मध्यस्थ के माध्यम से प्रति-भूतियों को बेचा जाता है। | यहाँ निवेशक प्रतिभूतियों के स्वामित्व बदलते है। |

**प्र०1. निम्नलिखित कथनों में दर्शाए गए बाज़ारों को पहचानें**

1. **यह बाज़ार पूंजी निर्माण में प्रत्यक्ष योगदान करता है।**
2. **यह बाज़ार ऐसे प्रपत्रों में व्यवहार करता है जिनकी परिपक्वता अवधि एक वर्ष तक है।**
3. **यह मध्यकालीन तथा दीर्घकालीन प्रतिभूतियों में व्यवहार करता है।**
4. **इसे शेयर बाज़ार भी कहा जाता है।**
5. **इसमें कम निवेश की आवश्यकता होती है क्योंकि प्रतिभूतियों का मूल्य प्रायः कम होतपा है।**

**(संकेतः–** 1. प्राथमिक बाज़ार 2. मुद्रा बाज़ार 3. पूंजी बाज़ार 4. द्वितीयक बाज़ार 5. पूंजी बाज़ार)

**प्र०2. दिनेश के पास किसी कम्पनी के 1000 अंश हैं। वह उसमें से 500 अंश बेचना चाहता है। उसे किस प्रकार के बाज़ार में जाना चाहिए? ऐसे बाज़ार के कोई तीन लाभ लिखो।**

**(संकेतः–** द्वितीयक बाज़ार, (कोई तीन लाभ)

**प्र०3. मुद्रा बाज़ार के विलेख पूंजी बाज़ार की तुलना में ज्यादा तरल क्यों है।?**

**(संकेतः–** 1. जल्द विक्रय 2. विश्वसनीय भागीदार)

## स्टॉक एक्सचेंज / शेयर बाज़ार

स्टॉक एक्सचेंज एक ऐसा संस्थान है जो विद्यमान प्रतिभूतियों के क्रय एवं विक्रय हेतु एक मंच उपलब्ध कराता है। इसके माध्यम से प्रतिभूतियों जैसे अंश, ऋण पत्र आदि को मुद्रा में परिवर्तित किया जा सकता है। स्टॉक एक्सचेंज के मुख्य कार्य निम्नलिखित है।

1. **विद्यमान प्रतिभूतियों को द्रवता एवं विनियोग उपलब्ध कराना**:- स्टॉक एक्सचेंज द्वारा प्रतिभूतियों के क्रय एवं विक्रय हेतु तैयार एव सतत् बाजार उपलब्ध कराया जाता है।

2. **प्रतिभूतियों का मूल्यन**:- स्टॉक एक्सचेंज निरन्तर मूल्यांकन द्वारा प्रतिभूमियों से सम्बन्धित विभिन्न सूचनाएं उपलब्ध कराता है जिससे उनके मूल्यन में सहायता मिलती है। प्रतिभूतियों की कीमत क्रेता तथा विक्रेता द्वारा उनकी मांग एवं पूर्ति की शक्तियों द्वारा तय की जाती है।

3. **लेन-देन की सुरक्षा**:- शेयर बाजार की सदस्यता बेहतर प्रकार से नियंत्रित होती है तथा यहाँ विद्यमान कानूनी ढांचे के अनुसार ही कार्य होता है जो निष्पक्ष लेन-देन सुनिश्चित करता है।

4. **आर्थिक विकास में योगदान**:- शेयर बाजार के माध्यम से बचतों को गतिशील बनाया जाता है तथा उन्हें सर्वाधिक उत्पादक निवेश पथों में सरणित किया जाता है। अतः यह पूंजी निर्माण एवं आर्थिक विकास में योगदान देता है।

5. **इक्विटी संप्रदाय का प्रसार**:- शेयर बाजार जनता को प्रतिभूतियों में निवेश के बारे में शिक्षित करता है जिससे इंक्विटी संप्रदाय का प्रसार होता है।

6. **सट्टेबाज़ी के लिए अवसर उपलब्ध कराना**:- शेयर बाजार कानूनी प्रावधान के अंतर्गत प्रतिबंधित एवं नियंत्रित तरीके से सट्टा संबंधी क्रियाकलापों के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध करता है।

बाम्बे स्टाक एक्सचेन्ज (बी.एस.ई) व नेशनल स्टाक एकस्चेन्ज भारत के दो मुख्य स्टॉक एक्सचेन्ज हैं।

**स्टॉक एक्सचेंज में लेनदेन की प्रक्रियाः-**

1. **दलाल का चयन करनाः-** स्टॉक एक्सचेंज पर लेन-देन करने के लिए सर्वप्रथम दलाल का चयन किया जाता है जो कि स्टॉक एक्सजेंज का सदस्य होना चाहिए क्योंकि स्टॉक एक्सचेंज पर लेनदेन हेतु वही अधिककृत होते है।
2. **डिपाजटरी के पास डीमांड खाता खोलना।**
3. **आदेश देनाः-** दलाल को निवेशक प्रतिभूतियों के क्रय-विक्रय का आदेश दिया जाता है।।
4. **आदेश निष्पादनः-** दलाल के द्वारा निवेशक के आदेश के अनुसार प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय किया जाता है।

कोई भी व्यवहार निपटने में (T+2) अर्थात, लेन-देन के दो दिन में निपटाया जाता है।

**प्र०** **एक कम्पनी के निर्देशक संयत्र व मशीनरी के आधुनिकीकरण के लिए, जनता को अंश जारी करना चाहते हैं। वे स्टॉक एक्सचेन्ज में जाना चाहते हैं, जबकि वित्त प्रबंधक नए अंशों के निर्गमन के लिए किसी सलाहाकार के पास जाना चाहते हैं। निर्देशक को सलाह दीजिए कि विह सलाहकार के पास जाऐं या स्टॉक एक्सचेंज में। इसके साथ-साथ नए निर्गमन के तरीकों के बारे में सुझाऐं।**

**उ०** निर्दशक को सलाहकार के पास जाना चाहिए।

स्टॉक एक्सचेन्ज में पुरानी प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय होता है। नई प्रतिभूतियों का नहीं।

नए निर्गमन के तरीकेः-

1. प्रविवरण के माध्यम से प्रस्ताव
2. बिक्री हेतु प्रस्ताव
3. प्राइवेट प्लेसमेंट
4. अधिकार निर्गमन
5. ई-आई पी ओ

**पूंजी बाज़ार तथा मुद्रा बाज़ार में अन्तरः-**

| क्र.सं. | आधार | पूंजी बाज़ार | मुद्रा बाज़ार |
|---|---|---|---|
| 1 | सहभागी | वित्तीय संस्थाएँ, बीमा कम्पनियाँ, बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय निवेशक तथा व्यक्ति निवेशक | भारतीय रिजर्व बैंक, व्यापारिक बैंक, गैर बैंकिग वित्त कम्पनियाँ, राज्य सरकारें, म्यूचुअल फण्ड |
| 2 | मुख्य प्रपत्र | समता अंश, बाण्ड, ऋण पत्र, पूर्वाधिकारी अंश | कोषागार प्रपत्र, वाणिज्यिक पत्र मांग, मुद्रा, जमा प्रमाण पत्र, वाणिज्यिक बिल |
| 3 | निवेश राशि | निवेश हेतु बहुत बड़ी राशि की आवश्यकता नहीं होती है | मुद्रा बाजार में लेन-देन हेतु बहुत बड़ी राशि की आवश्यकता होती है। |
| 4 | परिपक्वता अवधि | मध्य तथा दीर्घ अवधि के कोषों में व्यवहार किया | अल्प-अवधि वाले कोषों में व्यवहार किया जाता है। जाता है। |
| 5 | तरलता | मुद्रा बाजार के मुकाबले कम तरलता होती हैं | पूंजी बाजार के मुकाबले अधिक तरलता होती है। |
| 6 | संभावित प्रतिफल | अधिक आय प्राप्त | पूंजी बाजार के मुकाबले कम आय। |
| 7 | सुरक्षा / जोखिम | अधिक जोखिम होता है। | कम जोखिम होता है। |

## डिपोजिटरी सेवाऐंः-

अंशों के भौतिक रूप में हस्तान्तरण से सम्बन्धी कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए सेबी ने नई पद्धति का विकास किया जिसके अन्तर्गत शेयरों की ट्रेडिंग इलैक्ट्रानिक रूप में ही हो सकती हैं। डिपोजिटरी सेवा एवं डिमेट खाता इसके आधार हैंः-

## डिपोजिटरी सवाऐंः-

डिपोजिटरी एक संस्था अथवा संगठन है जो निवशकों की प्रतिभूतियों को इलेक्ट्रॉनिक रूप में रखती है, जिसमें व्यापार किया जाता है। प्रतिभूतियों के उदाहरण है शेयर, डिबेंचर, म्युचूअर फंड आदि।

एक डिपोजिटरी द्वारा प्रदान की गई सेवाओं को डिपोजिटरी सर्विसेज कहते हैं। नेशनल सिक्योरिटीज डिपोजिटरी लिमिटेड (एन.एस.डी.एल) और सेंट्रल डिपोजिटरी सर्विसेज लिमिटेड (सी.डी.एस.एल) वर्तमान में भारत में दो डिपोजिटरी है।

**डिपोजिटरी द्वारा प्रदान की गई सेवाऐं निम्नलिखितः-**

1. डीमेटिरियलाइजेशन (संक्षिप्त में डीमैट) प्रतिभूतियों के भौतिक प्रमाण पत्र को इलेक्ट्रानिक रूप में परिवर्तित करना।
2. रीमेटिरियलाइजेशन (संक्षिप्त में रीमैट)ः- डीमैट के विपरीत, अर्थात् इलेक्ट्रानिंक प्रतिभूतियों से भौतिक प्रमाण पत्र प्राप्त करना।
3. प्रतिभतियों के स्वामित्व का सुविधाजनक हस्तांतरण।
4. डिपोजिटरी से जुड़े स्कंन्द विपणि (Stock Exchange) पर किए ट्रेडो का निपटान।

## ऑनलाइन ट्रेडिंग में पक्षकार

भारत में आजकल कम्पनी के अंशों का क्रय विक्रय आन लाइन पेपर सहित हो गया है। डिपोजिटरी सेवा इसी पद्धति का नाम है। इस पद्धति के अन्तर्गत अंशों के स्वामित्व का हस्तान्तरण बिना भौतिक सपुर्दगी के केवल बुक लेखन के माध्यम से होता है। एक निवेशक को अपना डी-मेट खाता खुलवाना पड़ता है। जिसके माध्यम से वह अंशो का व्यवहार करता है। इसके चार पक्षकार होते हैंः-

1. **डिपोजिटरीः-** वह संस्थान जहाँ निवेशक अपने अंशों की इलेक्ट्रानिक रूप में रखता है। इस समय भारत के ये दो संस्थान है। एन.एस.डी.एल. 2) सी.एस.डी.एल।
2. **डिपोजिटरी पार्टिसिपेंटः-** यह निवेशकों के खाते खोलता है। उसके अंशो का हिसाब रखता है। आमतौर पर बैंक डिपोजिटरी पार्टिसिपेंट को काम करते हैं।

3. **निवेशकः**– वह व्यक्ति जो अंशों में व्यवहार करता है, उसके नाम का रिकार्ड रखा जाता है।

4. **अंश जारीकर्ता कम्पनीः**– वह संगठन जो प्रतिभूतियों जारी करती है। यह कम्पनी अंशधारियों की एक सूची डिपोजिटरी के पास भेजती है।

**डिपोजिटरी सर्विसेज का लाभः–**

1. किसी भी स्टॉक एक्सचेंज पर किसी भी कंपनी के शेयरों की बिक्री खरीद
2. समय की बचत
3. बिना किसी कागजी कार्यवाही के प्रतिभूतियों का व्यापार
4. सुविधाजनक व्यापार
5. लेनदेन में पारदर्शिता
6. सुरक्षा प्रमाणपत्र की कोई जालसाजी नहीं
7. शेयर बाजार में निवेशक की भौतिक उपस्थिति की आवश्यकता नहीं
8. सुरक्षा प्रमाण पत्र की विकृति एवं नुकसान का जोखिम नहीं।

**डीमैट खाताः–**

डीमैट खाता डीमेटिरियलाइजेशन खाते का संक्षिप्त नाम है। डीमैट खाते से अभिप्राय एक खाते से है, जो एक भारतीय नागरिक इलेक्ट्रॉनिक रूप से सूचीबद्ध प्रतिभूतियों में व्यापार करने के लिए डिपोज़िटरी भागीदान (बैंको, शेयर दलालों आदि) के पास खोला जाता है, जिसके द्वारा वह विभिन्न कम्पनियों की प्रतिभूतियों (अंशों, ऋण पत्रों आदि को इलेक्ट्रॉनिक रूप में रख सकता है।

इस प्रक्रिया के अन्तर्गत अंश प्रमाण पत्र को भौतिक रूप से इलेक्ट्रानिक रूप में बदला जाता है और उतने ही संख्या में अंश डिमेट खाते में जमा कर दिये जाते हैं। डीमैट खाते तक पहुँच के लिए एक इंटरनेट पासवर्ड तथा एक व्यवहार पासवर्ड आवश्यक होता है। प्रतिभूतियों का हस्तांतरण या खरीद उसके बाद ही की जा सकती है। डीमैट खाते पर प्रतिभूतियों की खरीद या बिक्री स्वचालित ढंग से हो जाती है, एक बाद व्यवहारों की संतुष्टि हो जाए व पूरे हो जाएँ।

**डीमैट खाते के लाभः–**

(1) कागजी कार्यवाही में कमी होती है।

(2) अंशों के हस्तांतरण के समय चोरी, देरी, क्षति होना आदि समस्याएँ समाप्त हो जाती है।

(3) अंशों के हस्तांतरण के व्यवहार करने पर स्टाम्प ड्यूटी नहीं लगती।

(4) अंशों की विषयम संख्या धारण की समाप्ति।

(5) प्रतिभूतियों के सेटलमेंट जल्दी होती है।

(6) इस पद्धति से विदेशी निवेशक आकर्षित होते हैं तथा विदेशी निवेश में वृद्धि होती है।

(7) एक अकेला डीमैट खाता समता व ऋण पत्रों दोनों में निवेश रख सकता है।

(8) व्यापारी कहीं से भी काम कर सकते हैं।

(9) बोनस/विघटन/विलय आदि से बने शेयरों के लिए डीमैट खाते में स्वचालित क्रेडिट

(10) प्रतिभूतियों का तुरन्त हस्तांतरण।

(11) निक्षेपागार भागीदार के पास रिकार्ड किया, पते का परिवर्तन उन सभी कम्पनियों में रजिस्टर हो जाता है जिनमें निवेशक प्रतिभूतियाँ रखता है, प्रत्येक कम्पनी के साथ अलग से पत्र-व्यवहार करने की आवश्यकता नहीं होती।

## डीमैट खाता खोलने की प्रक्रियाः-

यह खाता वैसे ही खोला जाता है जैसे बैंक खाता। निर्दिष्ट खाता खोलने के फार्म निक्षेपागार भागीदार के पास उपलब्ध होते हैं जिसे भरना आवश्यक होता है। मुवाक्किल तथा निक्षेपागार द्वारा मानक समझौतों पर हस्ताक्षर होते हैं जिसमें दोनों पक्षों के अधिकार तथा अनिवार्यताएँ होती हैं। फार्म के साथ, मुवाक्किल को खाताधारक के फोटोग्राफ, आवास के सबूत की सत्यापित प्रतिलिपि तथा पहचान का सबूत पेश करना आवश्यक होता है।

## भारतीय प्रतिभूति एवं विनियमन बोर्ड (सेबी):-

भारत सरकार ने सेबी की स्थापना 12 अप्रैल 1988 को एक प्रशासकीय निकाय के रूप में की थी। जिसके द्वारा प्रतिभूति बाजार के नियमित एवं स्वस्थ वृद्धि तथा निवेशकों की संरक्षा को बढ़ावा प्रदान हो सके। 30 जनवरी 1992 को सेबी को एक अध्यादेश के द्वारा वैधानिक निकाय का दर्जा दिया गया तथा बाद में संसद के अधिनियम के रूप में सेबी अधिनियम के रूप में सेबी अधिनियम 1992 में बदल दिया गया। सेबी के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है।

(1) शेयर बाजार तथा प्रतिभूति उद्योग को विनियमित करना ताकि क्रमबद्ध ढंग से उनकी क्रियाशीलता को बढ़ावा मिले।

(2) निवेशकों को संरक्षण प्रदान करना तथा उनके अधिकारों एवं हितों की रक्षा करना।

(3) व्यापार दुराचरों को रोकना तथा पूँजी बाजार को अधिक प्रतिस्पर्द्धी एवं पेशेवर बनाना।

(4) मध्यस्थों जैसे दलालों, मर्चेन्ट बैंकर्स आदि के लिए आयात संहिता विकसित तथा उन्हें विनियमित करना।

**सेबी के कार्यः-**

1. **विनियामक कार्यः-** इनका आशय ऐसे कार्यों से है जो स्टाक एकस्चेंजों के नियमन एवं नियन्त्रण के उद्देश्य से लिये जाते हैं।

2. **विकासात्मक कार्यः-** इनका आशय ऐसे कार्यों से है जिससे स्टॉक एकस्चेंजों के कार्यों को बढ़ावा तथा उनका विकास किया जा सके।

3. **संरक्षणात्मक कार्यः-** इसके अंतर्गत उन सभी कार्यों को शामिल किया जाता है जिनके द्वारा निवेशकों के हितों की सुरक्षा करने के प्रयास किए जाते हैं।

**सेबी के कार्य**

| विनियामक कार्य | विकास कार्य | संरक्षणात्मक कार्य |
|---|---|---|
| 1) नियम एवं अधिनियम बनाना | 1) मध्यस्थों को प्रशिक्षण देना | *1. आन्तरिक लेनदेनों को रोकना |
| 2) मध्यस्थें का पंजीयन करना रोकना | 2) शोध कार्य करना तथा | 2) प्राथमिकता आबंटन को |
| 3) कम्पनियों के अधिग्रहण का विनियमन करना | 3) निवेशकों को शिक्षित करना | **3) अनुचित व्यापार व्यवहारों को रोकना |
| 4) सामूहिक निवेश योजनाओं तथा म्युचुअल फंडो का पंजीकरण | 4) इन्टरनेट ट्रेडिंग के लिए पंजीयन स्कन्ध दलालो की आज्ञा देना। | 4) विनियोजकों का संरक्षण करना |
| 5) आंतरिक व्यापार एवं नियंत्रणकारी बोलियों पर नियंत्रण | 5) लोचदार अभिगम अपनाकर पूंजी बाजार के विकास का कार्य | ***5) कीमत रिगिंग को रोकना |
| 6) अधिनियम अनुसार अधिशुल्क या कोई अन्य प्रभार लगाना। | | 6) प्रतिभूति बाजार से सम्बन्धित नियम अधिनियम बनाना। |

* आन्तरिक मूल्यों में लेनदेन को रोकनाः– सेबी ने अंशों के भीतरी व्यापार पर रोक लगा रखी है। आन्तरिक व्यक्ति वे होते हैं जो कम्पनी से जुड़े होते हैं। निदेशक, प्रवर्तक आदि कम्पनी के आन्तरिक व्यक्ति होते हैं। इन व्यक्तियों के अपनी उच्च स्थिति पर आसीन होने के कारण कम्पनी की प्रतिभूतियों को प्रभावित करने वाली सूचनाओं का ज्ञान होता है। चूंकि वे कम्पनी के भीतरी व्यक्ति होते हैं तथा यदि वे इन सूचनाओं का उपयोग अपने निजी लाभ के लिए करते हैं तो इसे भीतरी व्यापार कहते हैं।

**उदाहरणः**– एक कम्पनी के संचीनक को यह पता है कि कम्पनी की आगामी वार्षिक सभा में बोनस अंशों की घोषणा की जायेगी। निश्चित है कि ऐसा होने पर कम्पनी के अंशों का मूल्य बढ़ जायेगा। वह बाज़ार से तुरन्त दो हज़ार अंश क्रय कर लेता है और अनुचित लाभ कमा लेता है। सेबी का कार्य यह है कि ऐसे व्यवहारों पर रोक लगाए। सेबी आन्तरिक लेनदेनों पर कठोर नियंत्रण लगाता है तथा कठोर कार्यवाही करता है।

** **अनुचित व्यापार व्यवहारों को रोकनाः**– सेबी का सबसे महत्वूपर्ण कार्य ऐसे सभी व्यवहारों को रोकना है जिनसे निवेशकों को धोखा दिये जाने या उनके साथ कपट किए जाने की संभावना पनपती हो जैसे कि प्रतिभूतियों के बाज़ार मूल्यों मं सट्टेबाज़ी।

*** **कीमत विद्रूपण को रोकनाः**– अपने एकाकी लाभ के लिए प्रतिभूतियों की बाज़ार कीमत को बढ़ाकर या घटाकर उसका विद्रूपण करने पर सेबी रोक लगाता है।

**प्र०1. भारत में स्टॉक एकस्चेंज के विनियमत व निवेशकों के अधिकारों व हित के लिए किस संस्था की स्थापना की गई ?** (1)
(**संकेतः**– सेबी)

**प्र०2. निम्नलिखित का विस्तार कीजिएः–** (3)
**CDSL**
**NSDL**
**DEMAT**
(**संकेतः**– 1. Central Depository Services Ltd. 2. National Securities Depository Ltd. 3. Dematerialisation)

**प्र०3. शबनम अपनी बचतों को अंश बाज़ार में निवेश करना चाहती है। इसके लिए सर्वप्रथम किस चीज़ का होना आवश्यक है ?** (1)
(**संकेतः**–एक डीमैट खाता)

**प्र०4. जूली अपनी शेयर सटिफिकेट्स की इलैक्ट्रानिक रूप में रखना चाहती है। इस संदर्भ में डिपोजिटरी कौन सी सेवाऐं देगा?**
**(संकेतः-** डीमैटिरियलाइज़ेशन)

**प्र०5. बन्धु लि० 1960 में बनी एक रियल इस्टेट कम्पनी है। 55 वर्षों में कम्पनी ने बाज़ार में अपने लिए एक जगह बना ली है। भारत में अपने व्यवसाय को जमाने के लिए कम्पनी ने भारतीय बाज़ार से पूंजी इकट्ठी करने व अपने को BSE में लिस्ट करवाने का निश्चय किया।**

**सेबी द्वारा किए गए उन कार्यों को बताऐं जिनसे निवेशक आराम व सुरक्षित महसूस करें।**
**(संकेतः-** 1. विनियामक कार्य
2. विकास कार्य
3. सुरक्षात्मक कार्य
(प्रत्येक के दो उपकार्य)

## अभ्यास के लिए प्रश्न

प्र०1. सुधा लि० ने एक लाख समता अंश रु. 10 प्रति अंश रु. 12 की दर से एक इन्वेस्टमेंट बैंकर को बेच दिए। जिसके आगे इसे जनता को जारी किया, रु. 20/- प्रति अंश की दर से। निर्गमन का प्रकार पहचानिए।

प्र०2. "प्राथमिक बाजार पूँजी बाजार में प्रत्यक्ष योगदान देते है और द्वितीयक बाजार अप्रत्यक्ष रूप से।" व्याख्या कीजिए।

प्र०3. मोहन टाटा मोटर्स के 50 शेयर बेचना चाहता है। शेयर के ट्रेडिंग बाजार की कार्य विधि की व्याख्या कीजिए।

प्र०4. चारू प्रकाश लि० में चार्टड एकाउंटैंट है। निर्देशकों से मीटिंग के दौरान उसे पता चला कि पिछले वर्षों के चलन के विरुद्ध कम्पनी इस वर्ष अच्छा लाभांश घोषित करेगी। आमतौर ऐसे समाचार से शेयर बाजारमें उछाल आता है। यह सोचते हुए, जनता तक समाचार पहुँचने से पहले, चार ने बड़ी मात्रा में कम्पनी के शेयर खरीद लिए।

(क) चारू ने किस प्रकार की शेयर ट्रेडिंग की ?

(ख) इस प्रकार के व्यवहार का विनियमन करने वाली संस्था का नाम बताइए। उसके इस प्रकार के तीन दूसरे कार्य लिखिए।

प्र०5. एक कम्पनी चेन्नई में अपनी नई शाखा खोलना चाहती है। अतिरिक्त पूँजी के लिए कम्पनी समता अंश जारी करने की योजना बना रही है, क्योंकि शेयर बाजार में उछाल आया हुआ है और जनता आसानी से अंशों में निवेश करेगी। अंश निगर्मन में निगर्मन लागतें अधिक आयेंगी और कम्पनी में तरलता का अभाव है। कम्पनी ने विचार किया कि मुद्रा बाजार के प्रपत्रों का उपयोग करके कार्यशील पूँजी का प्रबन्ध किया जाएगा।

(1) ऊपर वर्णित, पूँजी निगर्मन का प्रकार लिखिए।

(2) इसके अतिरिक्त, किन्ही अन्य दो निगर्मन के प्रकार लिखिए।

(3) मुद्रा बाजार में किस प्रकार के प्रपत्र को जारी करना उपयुक्त रहेगा और क्यों ?

प्र०6. मांग मुद्रा की कीमत दर में वृद्धि होने से अन्य अल्प-कालीन विलेखों पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

प्र०7. उस संस्था का नाम बताऐं जो एक रूक्तियों का समूह, चाहे समामेलित या असमामेलित, जिसका निर्माण प्रतिभूतियों की खरीद-बेच में मदद, विनियमन व नियंत्रण के लिए किया गया है। इस संस्था के तीन कार्यों की व्याख्या कीजिए।

प्र०8. पीको लि० के निर्देशकों ने अपनी वार्षिक सभा में समता अंशधारियों को बोनस अंश देने की घोषणा की। इसके तुरंत बाद, एक निर्देशक ने बाज़ार से 30,000 अंश 30 रु. प्रति अंश की दर से खरीदे और उन्हें बोनस अंश की घोषणा के बाद 100 रु. प्रति अंश की दर से बेच दिये और पूंजीघात लाभ कमाया।

(क) निर्देशक द्वारा आंतरिक सूचना का लाभ उठाने की प्रैक्टिस को क्या कहेंगे ?

(ख) सेबी ऐसी प्रैक्टिस को कैसे रोकती है ?

प्र०9. निम्नलिखित परिस्थितियों में कौन से वित्तीय प्रलेखक जारी किए जाऐंगेः-

(क) समता अंशों की निर्गमन लागतों को पूरा करने के लिए।

(ख) जब बैंक के पास जमा कम हो, और उधार की मांग में ज्यादा हो।

(ग) केन्द्रीय सरकार की तरफ से आर.बी.आई द्वारा जारी किए जाते हैं। इन्हें जीरो कूपन बाण्ड भी कहा जाता है।

(घ) अतिरिक्त धन राशि वाला बैंक कम वित्त वाले बैंक की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए।

प्र०10.काजल के पास एक कम्पनी के 1000 अंश हैं। वह उसमें से 500 अंश बेचना चाहती है। उसे कौन से बाज़ार में जाना चाहिए? अपने उत्तर के समर्थन में व्याख्या दीजिए।

प्र०11.जैन लि० ने अपने एक लाख समता अंश एक इन्वैस्टमेंट बैंकर को 10 रु. वाला 12रु. में बेचा है। बैंकर ने यह अंश जनता को 20रु. प्रति अंश बेचे। यह निर्गमन की कौनसी विधि है?

## उत्तर के लिए संकेत

उ०1. निजी नियोजन

उ०2. प्राथमिक बाजार निवेशकों की छोटी बचतों को कम्पनी तक पहुंचाते हैं। द्वितीयक बाज़ार, प्रतिभूतियों की आनरशिप को बदलते हैं

उ०3. (क) दलाल का चुनाव

(ख) डीमैट एकाउंट खोलना

(ग) ऑर्डर को निन्पादित करना

(घ) सैटलमेंट

(व्याख्या सहित)

उ०4. (क) आंतरिक व्यापार

(ख) सेबी, तीन कार्य

उ०5. (क) आई पी ओ

(ख) निजी नियोजन

(ग) बिक्री के लिए प्रस्ताव

(घ) वाणिज्यिक पेपर

उ०6. दूसरे विलेखों जैसे वाणिज्यिक पेपर, ट्रेजरी बिल आदि की मांग बढ़ जाएगी।

उ०7. सेबी कार्यों की व्याख्या

उ०8. (क) आंतरिक व्यापार

(ख) बचाव कार्यों द्वारा (व्याख्या सहित)

उ०9. (क) कमर्शियल पेपर

(ख) मांग मुद्धा

(ग) ट्रेजरी बिल

(घ) मांग मुद्धा

उ०10. द्वितीय बाज़ार क्योंकि यह बाज़ार पुरानी प्रतिभूतियों के क्रय-विक्रय के लिएस होता है।

उ०11. बिक्री के लिए प्रस्ताव